दीदी

(पुस्तक के कुछ अंश)

जुलाई माह में उस दिन,रात भर हुई बारिश के बाद ठंडी सुबह के समय,ओढ़ी हुई तेहस-नेहस चादर से चेहरे को ढ़कने और उसे पैरों से दबाने की कोशिश कर रहा था,इतने शांत माहौल में चौकें(किचन) से दादी की पूजा करते हुये मंत्र पढ़ने की आवाज एकदम साफ आ रही थी,घर 2 कमरों का रेल्वे क्वाटर था तो ज़्यादा बड़ा भी नही था इसलिए देवी-देवताओं की पूजा का स्थान चौकें (किचन) में ही बना था,घर पर सिर्फ हम 5 लोग ही रहते थे मैं,मेरी बड़ी दीदी, मम्मी-पापा,और दादी। मुझे ऐसा लगा की दीदी की मम्मी से कुछ बोल रही हैं मैने लेटे-लेटे ही ध्यान लगा कर सुनने को किया तो सुना..... मम्मी.!अगर आप शिब्बु से मेरे साथ जाने को बोलो तो मैं पापा से कह दूँगी आप परेशान न हो, पापा वैसे भी कितनी मेहनत करते हैं,कितना थक जाते हैं, शिब्बु हैं तो उसके ही साथ चली जाऊँगी! वैसे भी वो इतना होशियार हैं कितना दिमाग चलाता हैं। आगे............

जुलाई माह में उस दिन,रात भर हुई बारिश के बाद ठंडी सुबह के समय,ओढ़ी हुई तेहस-नेहस चादर से चेहरे को ढ़कने और उसे पैरों से दबाने की कोशिश कर रहा था,इतने शांत माहौल में चौकें(किचन) से दादी की पूजा करते हुये मंत्र पढ़ने की आवाज एकदम साफ आ रही थी,घर 2 कमरों का रेल्वे क्वाटर था तो ज़्यादा बड़ा भी नही था इसलिए देवी-देवताओं की पूजा का स्थान चौकें (किचन) में ही बना था,घर पर सिर्फ हम 5 लोग ही रहते थे मैं,मेरी बड़ी दीदी, मम्मी-पापा,और दादी। मुझे ऐसा लगा की दीदी की मम्मी से कुछ बोल रही हैं मैने लेटे-लेटे ही ध्यान लगा कर सुनने को किया तो सुना..... मम्मी.!अगर आप शिब्बु से मेरे साथ जाने को बोलो तो मैं पापा से कह दूँगी आप परेशान न हो, पापा वैसे भी कितनी मेहनत करते हैं,कितना थक जाते हैं, शिब्बु हैं तो उसके ही साथ चली जाऊँगी! वैसे भी वो इतना होशियार हैं कितना दिमाग चलाता हैं।

हम्म्म्म। बोलती हूँ पहले उठे तो नालायक,पर तेरे पापा माने तब तो..एक तो अभी-अभी इतनी दवा-दारु कराने के बाद उनकी तबियत ठीक हुई हैं नाइट ड्यूटी में कल रात भी भीग गए थे वो... पहले शिब्बु फिर तेरे पापा से बोलती हूँ।...जा अब उस लाड-साहब को उठा और बिस्तर समेट देना ...जा।.....मम्मी ने कहा।

मैं लेटा हुआ चादर में मुँह को ढके हुये सारी बातें सुन चुका था।

तभी अचानक पैरों से चादर खीचते हुये दीदी ने गुनगुना कर बोली.....

"उठ जा मेरा राज-दुलारा ,भैया मेरा सबसे प्यारा"

"जा ब्रश करले नौटंकी, भर गई हैं पानी की टंकी।" गानों की धुन को दीदी ने अपने शब्दों गा कर कहा।

दीदी न तंग किया कर यार सुबह-सुबह से।

'अरे मेरे छोटे हीरो तेरे लिए बहुत बढियां ऑफर हैं। जल्दी उठ और चल मेरे साथ ,मुझे ऑनलाइन वाली दुकान ले चल फिर बताती हूँ तेरे को सब।....'दीदी ने कहा।

अरे खुद के काम के लिए भाई याद आता हैं,मैं नही ले जा सकता,और ऑफर क्या ऑफर मैं तुम्हारे साथ दिल्ली चालु यही ना।

दीदी चौककर गुस्सा जताते हुए कहा.... अबे ओ बन्दर तुझे कैसे पता मैं तुझे लेकर दिल्ली जाने का बोलने वाली हूँ......! साले कामचोर जाग के सारी बातें सुना पर उठा नही, डला हैं अलाल बिस्तर पर।

मुझे मन-ही-मन ख़ुशी हो रही थी कि दिल्ली जाने का मौका मिल सकता हैं,बस पापा हाँ बोल दें।

दरअसल 30दिसम्बर को हमारे कॉलेज से लड़के-लड़कियों का ग्रुप दिल्ली गया था लेकिन उस वक़्त पापा की तबियत ठीक न होने के कारण मैं इस ग्रुप का सदस्य नही बन सका!

इतने में दीदी ने कहा ..... अब उठ जा यार जल्दी बिस्तर उठाना हैं मुझे,जल्दी नहा-धोकर नाश्ता कर और चल तू।

मैं उठा और दीदी बिस्तर समेट रही थी कि मैं पीछे से उनकी चोटी खींचकर बाहर की और दौड़ा लेकिन.............

धम्मम्म आ मम्मी

मम्मी और दादी भागते हुए आई।

मम्मी बोली ये देखो फिर गिरा पलंग से। और हँसने लगी।

दादी पंलग पर बैठी और मेरे सर पर हाथ फेरते हुए बोली.... शिब्बु महाराज आज कौनसा सपना देख कर ख़ुशी से गिर पड़े, ये लड़का जब जब सपने में खुश होता हैं बिस्तर से गिरता हैं।,बोलो इस बार कौनसी कहानी हैं।

जी हाँ आप सही हैं दिल्ली जाने की सारी बातें मेरे सपने में घटित हो रही थी।

मैं सपना टूट जाने के गम में डूबा ये सोच रहा था की *न जाने क्यों* मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता हैं।

तभी हाथ में न्यूज़-पेपर लेकर आये पापा बोले, उठो और जल्दी रेडी होकर अपनी दीदी को ऑनलाइन वाले पास ले जाओ, पता करना हैं उसको दिल्ली वाले फॉम का रिजल्ट क्या हुआ,फिर दिल्ली का रिजर्वेशन करायें, तुम और तुम्हारी दीदी दोनों चले जाने अगर एडमिशन मिल रहा हो तो।

मैने मम्मी से पूछा दीदी कहाँ हैं? तो मम्मी ने बोली वो नहा कर पूजा में लगी हैं,जा जल्दी तू भी नहा ले।

मैने मन-ही-मन फिर ख़ुश होकर सोचा।

"न जाने क्यों" पर मेरे साथ अच्छा ही होता हैं।